

III. बाह्य अर्थव्यवस्था

व्यापार सरणी के माध्यम से परिचालित वैश्विक संकट के प्रतिकूल प्रभाव ने वर्ष 2009-10 में भारत का व्यापारिक लेनदेन कम बनाये रखा। वर्ष 2009-10 के पहले पाँच महीनों में वणिक निर्यात और आयात में क्रमशः 31.0 प्रतिशत और 33.4 प्रतिशत की गिरावट आयी (वर्ष-दर-वर्ष)। वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के लिए भारत के भुगतान संतुलन की दृष्टि से, जबकि निर्यात में कमी आयी, आयात में पिछली तिमाही की तुलना में वृद्धि हुई, जो तेल की कीमतों में बढ़ोतरी को प्रतिबिंबित करता है। इसके परिणामस्वरूप भुगतान संतुलन में पिछली तिमाही से अधिक व्यापार घाटा देखा गया। निवल अदृश्य मदों में अधिशेष, जो धन-प्रेषण में उछाल के कारण हुआ था, ने व्यापार घाटों के लगभग 78 प्रतिशत का वित्तपोषण किया। इसके परिणामस्वरूप, चालू खाता में 5.8 बिलियन अमरीकी डॉलर का घाटा बना रहा। तथापि, वर्ष 2008-09 की अंतिम दो तिमाहियों के दौरान देखे गये पूँजी के बहिर्गमन के बाद पूँजी के पुनः आगमन ने आरक्षित निधियों में कोई हानि किये बिना घाटे के वित्तपोषण को सुनिश्चित किया। मूल्यांकन लाभ और आइएमएफ द्वारा भारत को आवंटित किये गये एसडीआर को शामिल करते हुए भारत की विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधि में 32.8 बिलियन अमरीकी डॉलर की बढ़ोतरी हुई और वह 16 अक्टूबर 2009 की स्थिति के अनुसार 284.8 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गयी।

III.1 हाल के महीनों में बाह्य आर्थिक वातावरण में सुधार हुआ है, जिसमें वैश्विक मंदी से उबरने के संकेत मिलते हैं, हालाँकि मंदी जैसी स्थिति अभी भी बनी हुई है और विश्व अर्थव्यवस्था के लिए यह संभावना है कि यह धीमी गति से मंदी से उबरेगी। उन देशों के भुगतान संबंधी लेनदेन में, जो वैश्वीकरण की प्रत्येक महत्वपूर्ण सरणी को लगे संकट-प्रेरित आघात के कारण काफी अस्तव्यस्त हो गया था, अभी भी सामान्य स्तर तक सुधार आना बाकी है। भारत के भुगतान संतुलन ने संक्रमण की सरणियों के प्रति अपनी समुत्थान शक्ति को प्रदर्शित किया था, जो वर्ष 2008-09

के दौरान चालू खाता घाटा के जीडीपी के 2.6 प्रतिशत पर रहने और आरक्षित निधि हानि (मूल्यांकन को घटा कर) के 20.1 बिलियन अमरीकी डॉलर रहने से स्पष्ट है। वर्ष 2009-10 में, जबकि निर्यात और आयात में वर्ष-दर-वर्ष गिरावट जारी रही, धन-प्रेषण से संबंधित पूँजी अंतर्वाह में उछाल बना रहा और पूँजी के पुनः आगमन ने उस पैटर्न को पलट दिया है, जिसे वर्ष 2008-09 की अंतिम दो तिमाहियों में पूँजीगत लेखा में देखा गया था।

अंतरराष्ट्रीय गतिविधियाँ

III.2 विश्व अर्थव्यवस्था में मंदी समाप्त होने के प्रारंभिक संकेत मिलने लगे हैं और अनेक उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में वर्ष 2008-09 की दूसरी तिमाही में थोड़ी धनात्मक वृद्धि दर्ज की गयी है, जबकि भारत में उत्पादन में संकुचन में महत्वपूर्ण रूप से कमी होने लगी है। तथापि, विश्व अर्थव्यवस्था की मंदी से उबरने की गति अनिश्चित बनी हुई है, जो इस तथ्य से स्पष्ट है कि मंदी से उबरने के लिए अभी भी उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की वित्तीय प्रणालियों में बने हुए दबाव के बीच अभूतपूर्व प्रेरक उपायों से समर्थन प्राप्त किया जा रहा है। वर्ष 2009 के लिए वृद्धि संबंधी दृष्टिकोण का लगातार अधोमुखी संशोधन करने के बाद, जिसे जुलाई 2008 के 3.9 प्रतिशत से जुलाई 2009 में -1.4 प्रतिशत किया गया था, आइएमएफ ने पहली बार अक्टूबर में वृद्धि संबंधी दृष्टिकोण का ऊर्ध्वमुखी संशोधन करते हुए उसे -1.1 प्रतिशत किया। चीन और भारत से उम्मीद है कि वे विश्व के मंदी से उबरने की अगुआई करेंगे।

III.3 वर्ष 2008 की अंतिम तिमाही और वर्ष 2009 की पहली तिमाही में संकुचन के बाद विश्व अर्थव्यवस्था में वृद्धि वर्ष 2009 की दूसरी तिमाही में धनात्मक हुई, जिसे एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में तगड़े कार्यनिष्पादन से और अन्य क्षेत्रों में स्थिरीकरण से सहारा मिला। अलग-अलग अर्थव्यवस्थाएँ चक्र के अलग-अलग बिंदु पर स्थित हैं। यद्यपि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मंदी की स्थिति बनी हुई है, जिनमें -3.4

प्रतिशत वृद्धि का पूर्वानुमान किया गया है, फिर भी उभरती हुई और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के बारे में अनुमान किया गया है कि उनमें वर्ष 2009 के दौरान 1.7 प्रतिशत वृद्धि होगी (सारणी 3.1)। उभरता हुआ एशिया वैश्विक प्रतिक्षेप का अग्रणी बना हुआ है, जिसमें चीन, हांगकांग, सिंगापुर और दक्षिण कोरिया में दूसरी तिमाही में वृद्धि में तेजी आयी है। चीन में जीडीपी वृद्धि के बारे में अनुमान किया गया है कि वह तीसरी तिमाही में और अधिक होकर 8.9 प्रतिशत हो जायेगी, जो महत्वपूर्ण राजकोषीय प्रेरक तत्वों तथा बैंक उधार में द्रुत वृद्धि से समर्थित होगी। अन्य उभरती हुई एशियाई बाजार अर्थव्यवस्थाओं में भी जीडीपी वृद्धि में तगड़ा समुत्थान हुआ है।

III.4 आगे बढ़ते हुए, विश्व अर्थव्यवस्था में वर्ष 2010 में थोड़ा सुधार होने की उम्मीद की जाती है। अक्टूबर 2009 में आइएमएफ ने वैश्विक उत्पादन के संबंध में वर्ष 2010 के लिए वृद्धि संबंधी अपने पूर्वानुमान का ऊर्ध्वमुखी संशोधन करते हुए जुलाई 2009 के 2.9 प्रतिशत के पूर्वानुमान से बढ़ा कर 3.1 प्रतिशत कर दिया। तथापि, इस समुत्थान की गति धीमी रहेगी और ऐसी चिंता जतायी जा रही है कि विश्व अर्थव्यवस्था के संभावित वृद्धि-पथ को दीर्घावधि में नुकसान हो सकता है।

III.5 यद्यपि वैश्विक आर्थिक संभावनाएँ अनिश्चित बनी हुई हैं, वैश्विक कार्यकलाप को होने वाली जोखिम के बारे में समग्र दृष्टिकोण यह है कि वह मोटे तौर पर संतुलित है। सकारात्मक पहलू यह है कि इन्वेंट्री का स्तर घटता प्रतीत हो रहा है, विश्व व्यापार में स्थिरीकरण होता दिखाई पड़ रहा है और उभरते विश्व में पूँजी प्रवाह की वापसी हो रही है। तथापि, विश्व-समुत्थान के पथ पर अनेक चुनौतियाँ सामने हैं। एक महत्वपूर्ण चिंता की बात बढ़ती बेरोजगारी और उससे सहबद्ध शिथिल उपभोक्ता व्यय है।

III.6 एक महत्वपूर्ण और जटिल मुद्दा, जो वैश्विक समुत्थान के लिए प्रासंगिक है, विस्तारक समष्टि आर्थिक नीति के वर्तमान अभूतपूर्व स्तर से बाहर निकलने के

सारणी 3.1: चुनिंदा आर्थिक संकेतक - विश्व

मद	2007	2008	2009पी	2010पी
1	2	3	4	5
I. वैश्विक उत्पादन (प्रतिशत परिवर्तन) #	5.2	3.0	-1.1	3.1
	(3.8)	(1.8)	(-2.3)	(2.3)
i) विकसित अर्थव्यवस्थाएं	2.7	0.6	-3.4	1.3
ii) अन्य उभरते बाजार और विकासशील देश	8.3	6.0	1.7	5.1
जिनमें से: विकासशील एशिया	10.6	7.6	6.2	7.3
भारत	9.4	7.3	5.4	6.4
II. उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति (प्रतिशत)				
i) विकसित अर्थव्यवस्थाएं	2.2	3.4	0.1	1.1
ii) अन्य उभरते बाजार और विकासशील देश	6.4	9.3	5.5	4.9
जिनमें से: विकासशील एशिया	5.4	7.5	3.0	3.4
III. निवल पूंजी प्रवाह* (बिलियन अमरीकी डॉलर)				
i) निवल निजी पूंजी प्रवाह (क+ख+ग)**	696.5	129.5	-52.5	28.3
क) निवल निजी प्रत्यक्ष निवेश	411.2	425.0	279.0	269.5
ख) निवल निजी संविभागीय निवेश	88.1	-85.4	-99.8	-110.4
ग) निवल अन्य निजी पूंजी प्रवाह	197.1	-210.1	-231.6	-130.8
ii) निवल अधिकारिक प्रवाह	-69.5	-105.7	50.3	-14.2
IV. वैश्विक व्यापार @				
i) व्यापार की मात्रा	7.3	3.0	-11.9	2.5
ii) निर्यात की मात्रा	7.4	2.8	-11.4	2.6
iii) व्यापार मूल्य अपस्फीतिकारक	8.1	11.2	-12.2	5.4
V. चालू खाता शेष (जीडीपी का प्रतिशत)				
i) यूएस	-5.2	-4.9	-2.6	-2.2
ii) चीन	11.0	9.8	7.8	8.6
iii) भारत	-1.0	-2.2	-2.2	-2.5
iv) मध्य - पूर्व	18.1	18.3	2.6	7.9

पी : अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का अनुमान

: वृद्धि दरें क्रय शक्ति समानता आधारित विनिमय दरों पर हैं। कोष्ठकों के आंकड़े बाजार विनिमय दरों पर वृद्धि दरें हैं।

* : उभरते बाजार और विकासशील देशों की ओर निवल पूंजी प्रवाह।

** : आंकड़ों की परिमितता के कारण 'निवल निजी पूंजी प्रवाह' के अंतर्गत कतिपय आधिकारिक प्रवाह भी शामिल हो सकते हैं।

@ : वस्तुओं और सेवाओं के वैश्विक निर्यात और आयात के वार्षिक प्रतिशत परिवर्तन का औसत।

स्रोत : वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक अक्टूबर 2009, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष।

युक्तियुक्त समय और गति से संबंध रखता है। जबकि सरल मौद्रिक नीति का शीघ्र प्रत्यावर्तन आरंभिक समुत्थान को निष्फल कर दे सकता है, इससे निकलने में विलंब करने से मुद्रास्फीति और स्फीतिकारक प्रत्याशाओं के बढ़ने की संभावना हो सकती है। यह बदले में ब्याज दरों को बढ़ा देगा, जो निरंतर वृद्धि का विरोधी होगा। भिन्न-भिन्न देशों में समर्थनकारी मौद्रिक नीति से बाहर निकलने के लिए अलग-अलग समय होने का परिणाम होगा ब्याज दरों में विभेद होना, जिसका परिणामी प्रभाव पूंजी प्रवाह और

विनिमय दरों पर होगा, जिनका प्रबंध उभरते बाजारों में विवेकपूर्ण ढंग से किया जाना होगा, ताकि वृद्धि और मुद्रास्फीति के लिए इनके प्रतिकूल निहितार्थ को निरुद्ध किया जा सके।

III.7 ओईसीडी इकोनॉमिक आउटलुक (सितंबर 2009) इस ओर इशारा करता है कि मंदी से उबरने के समय की जो परिकल्पना कुछ महीने पहले की गयी थी, उससे पूर्व ही मंदी से उबरा जा सकेगा। समग्र वित्तीय

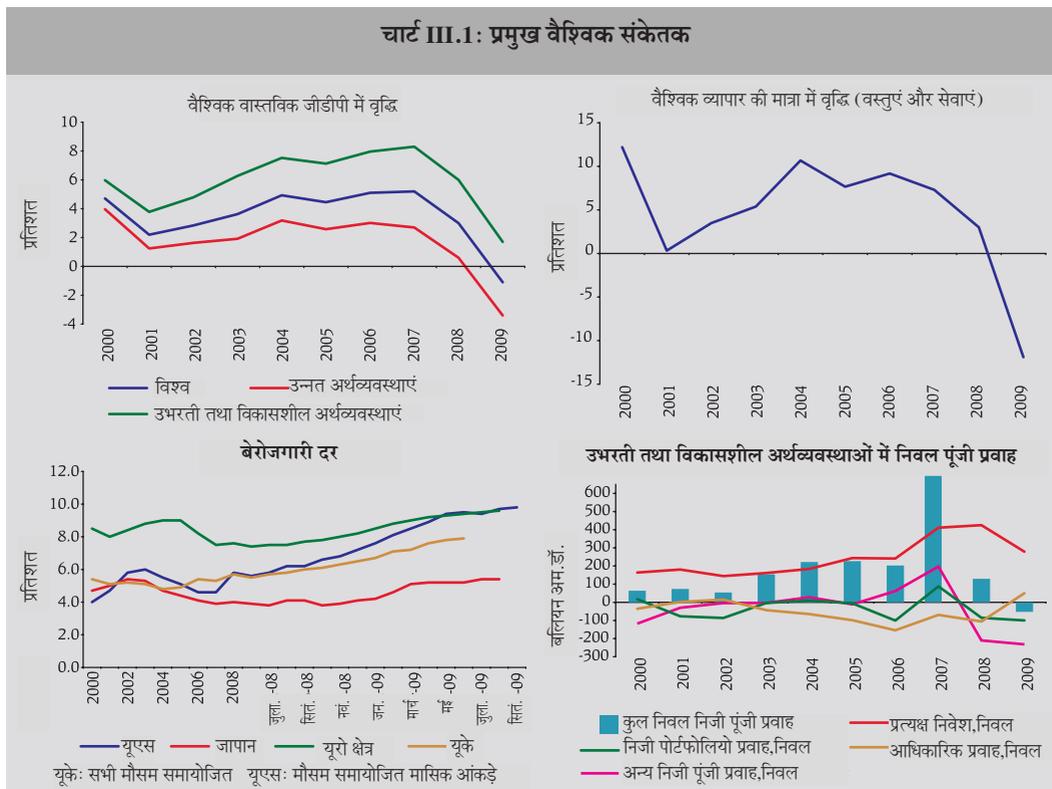
स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, हालाँकि बैंक उधार में गिरावट जारी है और बैंकिंग प्रणाली की स्थिति के बारे में चिंता बनी हुई है। किये जा रहे इन्वेंट्री समायोजन में प्रगति होती लग रही है और यह निकट भविष्य में प्रगति के लिए शुभ है। इसी प्रकार विश्व व्यापार में गिरावट एक गर्त में पहुँच चुकी प्रतीत होती है, जिसमें निर्यात में वर्ष 2009 की पहली तिमाही से दूसरी तिमाही में धनात्मक वृद्धि दिखाई पड़ती है। तथापि, समुत्थान की गति आने वाले कुछ समय के लिए मर्यादित हो सकती है, क्योंकि प्रचुर अतिरिक्त क्षमता, लाभप्रदता के न्यून स्तर, ऊँची और बढ़ती बेरोजगारी, श्रमिक आय में अरुचिकर वृद्धि और वर्तमान की आवास बाजार की मंदी निजी माँग में किसी वृद्धि को मंद कर देगी।

III.8 वैश्विक वित्तीय संकट ने विश्व-अर्थव्यवस्था को विविध सरणियों के माध्यम से प्रभावित किया। दुनिया

भर में वृद्धि में गिरावट और व्यापार संकुचन, जो सभी देशों के लिए सामान्य आघात था, के अतिरिक्त उन्नत अर्थव्यवस्थाएँ बढ़ती बेरोजगारी से प्रभावित हुईं, जिससे माँग में कमी आ गयी, जबकि उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) ने पूँजी प्रवाह में महत्वपूर्ण प्रत्यावर्तन का अनुभव किया, जिसने उनके बाजारों और वृद्धि की संभावना को प्रभावित किया। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बेरोजगारी की दर ऊँची बनी हुई है, भले ही ईएमई में पूँजी प्रवाह की वापसी होने लगी है (चार्ट III.1)।

III.9 वैश्विक आर्थिक संकट के प्रभाव के अंतर्गत मंद पड़ चुके विश्व आर्थिक कार्यकलाप के परिणामस्वरूप विश्व वणिक निर्यात में नवंबर 2008 से गिरावट आना आरंभ हो गया। उसके बाद वाले महीनों में वर्ष 2009 के दौरान भी विश्व निर्यात में तेज गिरावट जारी रही।

चार्ट III.1: प्रमुख वैश्विक संकेतक



तथापि, बाद में विश्व निर्यात में जून 2009 में सुधार होता दिखाई पड़ा, जिसमें वर्ष-दर-वर्ष गिरावट अब तक वर्ष 2009 में कम से कम होती गयी है (26.9 प्रतिशत)। आइएमएफ की अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सांख्यिकी के अनुसार विश्व वणिक निर्यात (डॉलर में) में जनवरी-जून 2009 की अवधि के दौरान 29.5 प्रतिशत की तीव्र गिरावट दर्ज की गयी, जबकि एक वर्ष पूर्व इसमें 25.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी (सारणी 3.2)। इसी अवधि के दौरान उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के निर्यात में इससे भी अधिक 31.1 प्रतिशत की ऋणात्मक वृद्धि देखी गयी, जबकि एक वर्ष पहले इसमें 21.6 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी थी। डब्ल्यूटीओ के अनुसार विश्व वणिक निर्यात में वर्ष 2009 की दूसरी तिमाही में पूर्ववर्ती तिमाही की तुलना में 8 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई, हालाँकि वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि में 33.0 प्रतिशत की गिरावट जारी रही।

सारणी 3.2: निर्यात में वृद्धि - वैश्विक परिदृश्य				
(प्रतिशत)				
क्षेत्र / देश	2007	2008	2008	2009
	जनवरी-दिसंबर		जनवरी-जून	
1	2	3	4	5
विश्व	14.1	16.2	25.9	-29.5
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं	13.5	11.0	21.6	-31.1
यूएस	12.0	11.9	18.0	-23.8
फ्रांस	12.8	10.0	22.5	-32.0
जर्मनी	18.0	10.6	23.6	-33.4
जापान	7.8	12.3	23.2	-37.9
उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं	15.1	25.6	34.1	-27.6
सिंगापुर	10.1	13.0	23.8	-31.7
चीन	25.6	17.3	21.8	-21.7
भारत	23.3	20.0	39.8*	-25.6*
इंडोनेशिया	14.7	24.4	27.8	-28.3
कोरिया	14.1	13.6	20.4	-22.7
मलेशिया	9.6	19.1	24.2	-31.2
थाईलैंड	17.0	12.9	25.0	-23.4

*. आंकड़े पिछले वर्ष की तदनु रूप अवधि की तुलना में जनवरी-अगस्त के हैं।
स्रोत : 1. आइएमएफ (www.imfstatistics.org)
 2. भारत के लिए वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।

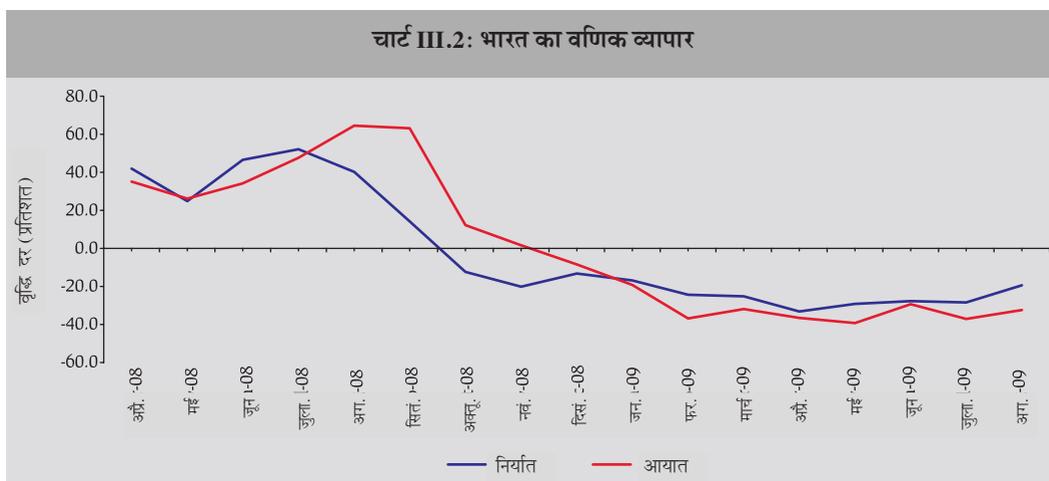
वणिक व्यापार

निर्यात

III.10 भारत में निर्यात में गिरावट, जो अक्टूबर 2008 में व्यापार सरणी के माध्यम से वैश्विक आर्थिक संकट के प्रभाव के कारण आरंभ हुई, वह वर्ष 2009-10 में बनी रही। निर्यात में गिरावट की दर अप्रैल 2009 में उच्चतम स्तर पर पहुँची, जिसमें बाद के महीनों में कुछ नरमी दिखाई पड़ी (चार्ट III.2)। समग्रतः, भारत के वणिक व्यापार में वर्ष 2009-10 के पहले पाँच महीनों (अप्रैल-अगस्त 2009) में 31.0 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में इसमें 52.3 प्रतिशत की उच्च वृद्धि दर्ज की गयी थी।

III.11 वर्ष 2008-09 के दौरान भारत के निर्यात समूह का संघटन यह बताता है कि कुल निर्यात में विनिर्मित वस्तुएँ 67.2 प्रतिशत के बड़े हिस्से के लिए जिम्मेवार हैं, जिसके बाद पेट्रोलियम और प्राथमिक उत्पादों का स्थान है। वर्ष 2008-09 के दौरान प्रमुख वस्तु-समूहों के निर्यात में कमी आयी, जबकि रत्नों और आभूषणों के निर्यात में काफी वृद्धि हुई और इंजीनियरिंग वस्तुओं में वृद्धि में थोड़े सुधार का प्रदर्शन हुआ (सारणी 3.3)।

III.12 गंतव्य देशों के अनुसार, विकासशील और ओईसीडी देश वर्ष 2008-09 में भारत के निर्यात के प्रमुख बाजार थे, जिसमें से प्रत्येक समूह कुल निर्यात में 37.0 प्रतिशत से अधिक के हिस्से के लिए जिम्मेवार था, जिसके बाद ओपेक देशों का स्थान आता है (21.2 प्रतिशत)। देशवार दृष्टि से देखा जाये तो वर्ष 2008-09 में भारत के निर्यात के लिए एकल बड़ा गंतव्य स्थल यूएई था, जिसने अमरीका का स्थान ले लिया, जो अनेक वर्षों तक भारत के निर्यात का सबसे बड़ा बाजार रहा था। समग्रतः, वर्ष 2008-09 के दौरान भारत के निर्यात की दिशा से पता चलता है कि एशियाई विकासशील देशों को निर्यात में गिरावट आयी; ईयू और उत्तरी अमरीका को निर्यात



वृद्धि में गिरावट आयी, जबकि ओपेक देशों को निर्यात में त्वरित वृद्धि दिखाई पड़ी (सारणी 3.4)।

आयात

III.13 आयात में गिरावट का क्रम, जो अक्टूबर-नवंबर 2008 के दौरान बना रहा, उसके बाद ऋणात्मक हो गया, जिसमें आयात में गिरावट की दर क्रमिक रूप से बढ़ी और

मई 2009 में उच्चतम स्तर पर पहुँच गयी (39.2 प्रतिशत)। हालाँकि आयात में गिरावट की दर में जून 2009 में काफी नरमी आयी, फिर भी यह जुलाई 2009 में पुनः बढ़ गयी। तथापि, अगस्त 2009 में आयात में गिरावट जुलाई 2009 की तुलना में कम हुई। अप्रैल-अगस्त 2009 के दौरान आयात में 33.4 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी, जबकि एक वर्ष पहले इसमें 52.1 प्रतिशत की वृद्धि

सारणी 3.3: प्रमुख पण्यों का निर्यात

वस्तु समूह	बिलियन अमरीकी डॉलर			घट-बढ़ (प्रतिशत)	
	2006-07	2007-08सं.	2008-09अ.	2007-08	2008-09
	अप्रैल-मार्च			अप्रैल-मार्च	
1	2	3	4	5	6
1. प्राथमिक उत्पाद	19.7	27.6	25.3	40.0	-8.1
जिसमें से:					
क) कृषि एवं संबद्ध उत्पाद	12.7	18.4	17.5	45.3	-4.9
ख) अयस्क और खनिज	7.0	9.1	7.8	30.2	-14.5
2. विनिर्मित उत्पाद	84.9	103.0	122.8	21.3	19.3
जिसमें से :					
क) रसायन एवं संबद्ध उत्पाद	17.3	21.2	22.6	22.3	6.8
ख) इंजीनियरिंग वस्तुएं	29.6	37.4	47.3	26.4	26.5
ग) वस्त्र एवं वस्त्र उत्पाद	17.4	19.4	20.0	11.8	3.0
घ) रत्न एवं आभूषण	16.0	19.7	27.7	23.2	40.8
3. पेट्रोलियम उत्पाद	18.6	28.4	26.8	52.2	-5.4
4. कुल निर्यात	126.4	162.9	182.6	28.9	12.1
ज्ञापन:					
तेल से इतर निर्यात	107.8	134.5	155.8	24.8	15.8
सं.: संशोधित		अ.: अनंतिम			
स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।					

सारणी 3.4: भारत के निर्यात की दिशा

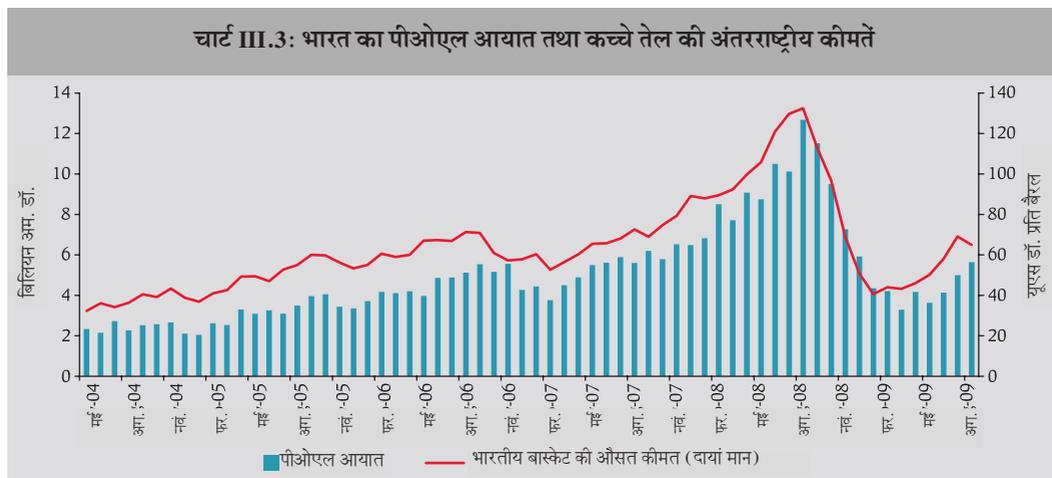
समूह / देश	बिलियन अमरीकी डॉलर			घट-बढ़ (प्रतिशत)	
	2006-07	2007-08सं.	2008-09अ.	2007-08	2008-09
	अप्रैल-मार्च			अप्रैल-मार्च	
1	2	3	4	5	6
1. ओईसीडी देश	53.1	64.3	68.3	21.1	6.2
जिसमें से :					
क) ईयू	26.8	34.5	39.0	28.7	12.9
ख) उत्तरी अमरीका	20.0	22.0	22.2	10.0	0.9
यूएस	18.9	20.7	20.8	9.8	0.5
2. ओपेक	21.0	27.0	38.8	28.8	43.8
जिसमें से :					
यूईई	12.0	15.6	23.9	29.9	53.1
3. विकासशील देश	50.4	69.2	68.6	37.2	-0.8
जिसमें से :					
एशिया	37.6	51.5	51.4	36.9	-0.2
पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना	8.3	10.8	9.3	30.6	-14.3
सिंगापुर	6.1	7.4	8.2	21.4	11.4
4. कुल निर्यात	126.4	162.9	182.6	28.9	12.1

सं.:संशोधित अ.:अनंतिम
स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।

हुई थी और यह गिरावट पीओएल और गैर पीओएल, दोनों प्रकार के आयात में देखी गयी। पिछले नौ महीनों में आयात में लगातार देखी गयी कमी मुख्यतः कच्चे तेल के न्यून अंतरराष्ट्रीय मूल्य का और उच्च आधार प्रभाव के अतिरिक्त घरेलू आर्थिक कार्यकलाप के धीमे रहने का नतीजा था।

III.14 पण्यवार आयात ने यह इंगित किया कि पीओएल आयात में वृद्धि में एक वर्ष पहले के स्तर (39.9 प्रतिशत) से वर्ष 2008-09 में गिरावट (14.6 प्रतिशत) दिखी, जिसका मुख्य कारण था अगस्त 2008 से कच्चे तेल के अंतरराष्ट्रीय मूल्य में कमी आना और पीओएल आयात के परिमाण में वृद्धि में भी गिरावट आना (चार्ट III.3)।

चार्ट III.3: भारत का पीओएल आयात तथा कच्चे तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतें



गैर पीओएल आयात में वृद्धि में भी पिछले वर्ष के स्तर (33.4 प्रतिशत) से नरमी (16.5 प्रतिशत) दिखाई पड़ी, जिसमें गिरावट मुख्यतः पूँजीगत वस्तुओं, सोना और चाँदी, तथा लोहे और इस्पात के आयात के कारण हुई। तथापि, मोती, बहुमूल्य और कम बहुमूल्य पत्थरों का आयात वर्ष के दौरान काफी बढ़ा (सारणी 3.5)।

III.15 स्रोतवार दृष्टि से देखा जाय तो वर्ष 2008-09 के दौरान भारत के आयात में विकासशील देशों का सर्वाधिक हिस्सा था (32.9 प्रतिशत), जिसके बाद ओपेक और ओईसीडी देशों का स्थान आता है। यह स्थिति वर्ष 2007-08 के विपरीत है, जब भारत के आयात में ओईसीडी देशों का हिस्सा सर्वाधिक था। देशवार दृष्टि से चीन भारत के आयात का अकेला सबसे बड़ा स्रोत बना रहा, जिसके बाद यूएई, सऊदी अरब, अमरीका, ईरान और जर्मनी का स्थान था।

III.16 भारत के वणिज्य व्यापार घाटे में वर्ष 2007-08 में हुई 7.5 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में वर्ष 2008-09

में 9.4 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी। अप्रैल-अगस्त 2009 में वणिज्य व्यापार घाटा पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि की तुलना में कम हुआ, जो निर्यात की तुलना में आयात में अपेक्षाकृत अधिक कमी को प्रतिबिंबित करता है (सारणी 3.6)।

भुगतान संतुलन (बीओपी)

चालू खाता

III.17 समकालिक वैश्विक आर्थिक मंदी और वर्ष 2008-09 की दूसरी छमाही से वैश्विक व्यापार में गिरावट के संयुक्त प्रभाव ने वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में भारत के चालू खाता में लेनदेन को प्रभावित करना जारी रखा। अक्टूबर 2008 से निर्यात में देखी गयी गिरावट वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में जारी रही। भुगतान संतुलन के आधार पर भारत के वणिज्य व्यापार में अप्रैल-जून 2009 में 21.0 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी,

सारणी 3.5: प्रमुख वस्तुओं का आयात

वस्तु / समूह	बिलियन अमरीकी डॉलर			घट-बढ़ (प्रतिशत)	
	2006-07	2007-08सं.	2008-09अ.	2007-08	2008-09
	अप्रैल-मार्च			अप्रैल-मार्च	
1	2	3	4	5	6
पेट्रोलियम, पेट्रोलियम उत्पाद और संबंधित सामग्री	56.9	79.6	91.3	39.9	14.6
खाद्य तेल	2.1	2.6	3.4	21.4	34.4
लोहा और इस्पात	6.4	8.7	9.4	35.2	7.8
पूँजीगत वस्तुएं	47.1	70.1	70.5	49.0	0.6
मोती, मूल्यवान और कम मूल्यवान रत्न	7.5	8.0	14.4	6.5	81.1
रसायन	7.8	9.9	12.2	26.4	22.8
सोना और चाँदी	14.6	17.9	18.7	22.0	4.6
कुल आयात	185.7	251.4	291.5	35.4	15.9
<i>जापन:</i>					
तेल से इतर आयात	128.8	171.8	200.2	33.4	16.5
सोना और चाँदी को छोड़कर तेल से इतर आयात	114.1	153.9	181.5	34.9	17.9
मुख्यतः औद्योगिक आयात*	104.8	140.9	160.3	34.4	13.8
सं.: संशोधित. अ.: अनंतिम.					
*: तेल से इतर आयात सोने और चाँदी, थोक उपभोक्ता वस्तुओं, विनिर्मित उर्वरक और प्रोफेशनल औजारों के आयात को घटाकर है।					
स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।					

सारणी 3.6: भारत का वणििक माल व्यापार			
(बिलियन अमरीकी डॉलर)			
मद	2008-09सं.	2008-09सं.	2009-10अ
		अप्रैल-अगस्त	
1	2	3	4
निर्यात	182.6	93.0	64.1
तेल	26.8	16.0	..
तेल से इतर	155.8	77.0	..
आयात	291.5	153.7	102.3
तेल	91.3	53.7	28.3
तेल से इतर	200.2	99.9	74.0
व्यापार संतुलन	-108.8	-60.7	-38.2
तेल से इतर वस्तुओं का व्यापार संतुलन	-44.4	-23.0	..
घट-बढ़ (प्रतिशत)			
निर्यात	12.1	52.3	-31.0
तेल	-5.4	50.8	..
तेल से इतर	15.8	52.6	..
आयात	15.9	52.1	-33.4
तेल	14.6	86.6	-47.4
तेल से इतर	16.5	38.4	-25.9

सं: संशोधित अ: अर्न्तम
.. : उपलब्ध नहीं
स्रोत : वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।

जबकि अप्रैल-जून 2008 में इसमें 43.0 प्रतिशत की तीव्र वृद्धि हुई थी। इसी प्रकार, ऋणात्मक आयात-वृद्धि की प्रवृत्ति, जो लगभग सात वर्षों के अंतराल के बाद वर्ष 2008-09 की चौथी तिमाही में देखी गयी थी, वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में जारी रही। वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान आयात में 19.6 प्रतिशत की गिरावट आयी, जबकि एक वर्ष पहले की तदनुकूल अवधि में इसमें 42.9 प्रतिशत की धनात्मक वृद्धि हुई थी - जिसका मुख्य कारण था तेल आयात बिल का कम होना। तथापि, वर्ष 2008-09 की अंतिम तिमाही की तुलना में वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में निर्यात में गिरावट आयी, जबकि आयात में वृद्धि दर्ज की गयी, जो तेल की कीमतों में वृद्धि को प्रतिबिंबित करती है। इसके परिणामस्वरूप वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में व्यापार घाटा (26.0 बिलियन अमरीकी डॉलर) पूर्ववर्ती तिमाही की तुलना में अधिक हुआ, हालाँकि यह

वर्ष 2008-09 की पहली तिमाही के दौरान दर्ज किये गये व्यापार घाटे से कम था (सारणी 3.7)।

अदृश्य मदें

III.18 वैश्विक मंदी के बने रहने के प्रभाव का प्रदर्शन करते हुए सकल अदृश्य प्राप्तियों में थोड़ी-सी गिरावट दर्ज की गयी, जबकि अदृश्य भुगतान में वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान धनात्मक वृद्धि दर्ज की गयी (सारणी 3.8)। तिमाही के दौरान अदृश्य प्राप्तियों में गिरावट बीमा और वित्तीय सेवाओं को छोड़ कर सेवाओं की लगभग सभी कोटियों में गिरावट और निवेश-आय प्राप्तियों में तेज गिरावट (20.3 प्रतिशत) के कारण हुई, जिसका मुख्य कारण था अन्य देशों में न्यून ब्याज दरों का प्रचलित रहना। यद्यपि सॉफ्टवेयर सेवाओं के निर्यात में पहली तिमाही के दौरान गिरावट दर्ज की गयी, वित्तीय वर्ष 2009-10 के दौरान इनके 4 से 7 प्रतिशत बढ़ने का अनुमान (नैसकॉम द्वारा) लगाया गया है। निजी अंतरण प्राप्तियाँ, जिनमें मुख्यतः विदेशों में काम कर रहे भारतीयों द्वारा भेजा गया धन-प्रेषण और एनआरआई रुपया जमाराशियों में से स्थानीय स्तर पर आहरण शामिल है, वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में बढ़ीं। तिमाही के दौरान अदृश्य भुगतानों में धनात्मक वृद्धि होने का मुख्य कारण था गैर-सॉफ्टवेयर सेवाओं, यथा, कारोबार और वित्तीय सेवाओं एवं आय-लेखा के अंतर्गत भुगतान का अधिक बढ़ना। निवेश-आय संबंधी भुगतान में थोड़ी-सी बढ़ोतरी भारत में एफडीआई कंपनियों की पुनर्निवेशित आय में वृद्धि के कारण हुई।

III.19 यद्यपि निवल अदृश्य मदें (अदृश्य प्राप्तियाँ घटाव अदृश्य भुगतान) वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि की तुलना में थोड़ी-सी कम थी, अदृश्य मदों के अधिशेष ने वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में व्यापार घाटों के लगभग 77.7 प्रतिशत का वित्तपोषण किया (वर्ष 2008-09 की पहली तिमाही में 71.3 प्रतिशत)। अदृश्य मदों में अधिशेष रहने के बावजूद पूर्ववर्ती तिमाही में मुख्यतः निर्यात में गिरावट और आयात में बढ़ोतरी के चलते

सारणी 3.7: भारत का भुगतान संतुलन							
(बिलियन अम.डॉ.)							
मद	अप्रैल-मार्च		2008-09			2009-10	
	2007-08 आंसं.	2008-09 प्रा.	अप्रैल-जून आंसं.	जुला-सितं.आंसं.	अक्तू-दिसं. आंसं.	जन-मार्च प्रा.	अप्रैल-जून प्रा.
1	2	3	4	5	6	7	8
1. निर्यात	166.2	175.2	49.1	49.0	37.3	39.8	38.8
2. आयात	257.8	294.6	80.5	87.7	72.0	54.4	64.8
3. व्यापार संतुलन (1-2)	-91.6	-119.4	-31.4	-38.7	-34.7	-14.6	-26.0
4. निवल अदृश्य निवल	74.6	89.6	22.4	26.2	21.7	19.3	20.2
5. चालू खाता शेष (3+4)	-17.0	-29.8	-9.0	-12.5	-13.0	4.7	-5.8
6. सकल पूंजी अंतर्वाह	433.0	302.5	90.9	85.0	69.5	57.1	78.5
7. सकल पूंजी बहिर्वाह	325.0	293.3	79.7	77.5	73.7	62.4	71.8
8. निवल पूंजी खाता (6-7)	108.0	9.1	11.1	7.6	-4.3	-5.3	6.7
9. समग्र शेष (5+8)#	92.2	-20.1	2.2	-4.7	-17.9	0.3	0.1
ज्ञापन:							
i. निर्यात वृद्धि (%)	28.9	5.4	43.0	28.0	-9.1	-24.2	-21.0
ii. आयात वृद्धि (%)	35.2	14.3	42.9	47.3	7.3	-27.3	-19.6
iii. व्यापार शेष (जीडीपी के % के रूप में)	-7.8	-10.3					
iv. अदृश्य प्राप्तियों में वृद्धि (%)	29.7	9.4	30.3	34.3	1.8	-16.6	-0.7
v. अदृश्य भुगतानों में वृद्धि (%)	18.7	-1.4	13.5	14.4	3.1	-24.7	11.9
vi. सीएडी, जीडीपी के % के रूप में	1.5	2.6					
vii. विदेशी मुद्रा भंडार (अवधि के अंत में)	309.7	252.0	312.1	286.3	256.0	252.0	265.1
#: समग्र शेष में मद सं. 5 और 8 के अलावा भूल-चूक शामिल है।							
आंसं. : आंशिक संशोधन प्रा: प्रारंभिक							

हुआ बड़ा व्यापार घाटा वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान 5.8 बिलियन अमरीकी डॉलर के चालू खाता घाटे का कारण बना, जबकि यह घाटा वर्ष 2008-09 की पहली तिमाही के दौरान 9.0 बिलियन अमरीकी डॉलर का हुआ था। वर्ष 2008-09 के दौरान चालू खाता घाटा जीडीपी के प्रतिशत के रूप में 2.6 प्रतिशत था, जो एक वर्ष पहले के घाटे से 1.5 प्रतिशत अधिक था (चार्ट III.4)।

पूँजीगत लेखा

III.20 वर्ष 2008-09 की तीसरी तिमाही से निरंतर दबाव में बने रहने के बाद उन्नत वित्तीय बाजारों में बड़े स्तर की डिलीवरेजिंग के चलते पूंजी खाते में वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान पुनरुत्थान देखा गया। भारत में पूंजी अंतर्वाह, खास कर विदेशी निवेश का पुनरुत्थान

होने से पूंजी खाते ने वर्ष 2008-09 की अंतिम दो तिमाहियों में ऋणात्मक शेष से वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में 6.7 बिलियन अमरीकी डॉलर के धनात्मक शेष के रूप में बदलाव का प्रदर्शन किया (सारणी 3.9)।

III.21 घटकवार दृष्टि से देखा जाये, तो भारत में निवल आवक एफडीआइ में वर्ष 2009-10 में अप्रैल-जून के दौरान उछाल बना रहा, जो भारत में अपेक्षाकृत बेहतर निवेश वातावरण के होने और एफडीआइ को आकृष्ट करने के लिए निरंतर किये जा रहे उपायों को प्रतिबिंबित करता है। वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान विनिर्माण क्षेत्र एफडीआइ के अधिकांश हिस्से (19.2 प्रतिशत) को आकृष्ट करता रहा, जिसके बाद स्थावर संपदा कार्यकलापों (15.6 प्रतिशत) और वित्तीय सेवाओं (15.4 प्रतिशत) का स्थान था।

सारणी 3.8: अदृश्य मदों से सकल प्राप्तियाँ और भुगतान

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	अदृश्य मदों से संबंधित प्राप्तियाँ			अदृश्य मदों से संबंधित भुगतान		
	अप्रैल-मार्च	अप्रैल-जून		अप्रैल-मार्च	अप्रैल-जून	
	2008-09 (प्रा.)	2008-09 (आंसं.)	2009-10 (प्रा.)	2008-09 (प्रा.)	2008-09 (आंसं.)	2009-10 (प्रा.)
1	2	3	4	5	6	7
1. यात्रा	10.9	2.5	2.3	9.4	2.2	2.0
2. परिवहन	11.1	2.6	2.5	12.8	3.3	2.8
3. बीमा	1.4	0.4	0.4	1.1	0.2	0.3
4. अन्यत्र शामिल न की गई सरकार	0.4	0.1	0.1	0.8	0.1	0.1
5. विविध	77.5	17.5	17.1	27.3	5.6	8.2
जिसमें से:						
सॉफ्टवेयर	47.0	12.2	10.8	2.8	0.9	0.4
सॉफ्टवेयर से इतर	30.5	5.3	6.4	24.5	4.8	7.8
6. अंतरण	47.0	12.3	13.3	2.7	0.7	0.5
जिसमें से:						
निजी अंतरण	46.4	12.2	13.3	2.3	0.5	0.4
7. आय	14.3	3.6	3.0	18.8	4.4	4.7
निवेश आय	13.5	3.4	2.7	17.5	4.1	4.4
कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति	0.8	0.2	0.2	1.3	0.3	0.3
कुल (1 से 7)	162.6	38.9	38.7	73.0	16.5	18.5

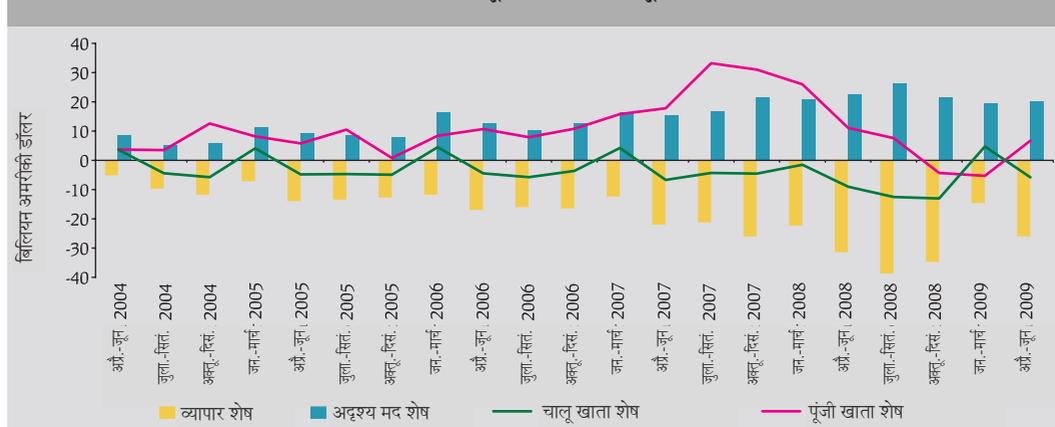
प्रा. प्रारंभिक

आंसं: आंशिक संशोधन

III.22 संविभाग निवेश, जिसमें प्रमुख रूप से संस्थागत निवेशकों (एफआइआइ) के निवेश और अमरीकी निक्षेपागार रसीदें (एडीआर)/वैश्विक निक्षेपागार रसीदें (जीडीआर) शामिल होते हैं, में तीव्र बदलाव देखा गया,

जो वर्ष 2008-09 की चौथी तिमाही में निवल बहिर्वाह से वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में निवल अंतर्वाह वाला हो गया। वर्ष 2009-10 के दौरान एफआइआइ अंतर्वाह में तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण घरेलू शेयर

चार्ट III. 4: चालू खाता शेष और पूंजी प्रवाह



सारणी 3.9: निवल पूंजी प्रवाह

(बिलि.अम.डॉ.)

मद	2008-09 अप्रैल- मार्च प्रा.	2008-09			2009-10	
		अप्रै-जून आंसं.	जुला-सितं. आंसं.	अक्टू-दिसं. आंसं.	जन-मार्च प्रा.	अप्रै-जून प्रा.
1 2	3	4	5	6	7	
1. विदेशी प्रत्यक्ष निवेश	17.5	9.0	4.9	0.4	3.2	6.8
आवक एफडीआइ	35.0	11.9	8.8	6.3	8.0	9.5
जावक एफडीआइ	17.5	2.9	3.9	5.9	4.8	2.6
2. संविभागीय निवेश	-14.0	-4.2	-1.3	-5.8	-2.7	8.3
जिसमें से:						
विदेशी संस्थागत निवेशक	-15.0	-5.2	-1.4	-5.8	-2.6	8.2
एडीआर / जीडीआर	1.2	1.0	0.1	0.0	0.02	0.04
3. बाह्य सहायता	2.6	0.4	0.5	1.0	0.8	0.08
4. बाह्य वाणिज्यिक उधार	8.2	1.5	1.7	3.9	1.1	-0.4
5. अनिवासी भारतीयों की जमाराशियां	4.3	0.8	0.3	1.0	2.2	1.8
6. अनिवासी भारतीयों की जमाराशियों को छोड़कर बैंकिंग पूंजी	-7.7	1.9	1.9	-6.0	-5.4	-5.2
7. अल्पावधि व्यापार ऋण	-5.8	2.4	1.3	-4.0	-5.5	-3.1
8. रुपया ऋण चुकौती	-0.1	-0.03	-	-	-0.07	-0.02
9. अन्य पूंजी	4.1	-0.5	-1.6	5.2	1.1	-1.6
कुल (1 से 9)	9.1	11.1	7.6	-4.3	-5.3	6.7

प्रा: प्रारंभिक

आसं: आंशिक संशोधन

बाजारों में अंतरराष्ट्रीय रुझानों का अनुसरण करते हुए समुत्थान और भारत में तुलनात्मक दृष्टि से बेहतर वृद्धि संभावना का होना था। वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान एडीआर/जीडीआर के अंतर्गत निवल अंतर्वाह पिछले वर्ष की तदनुकूल तिमाही की तुलना में काफी कम थे, जो विदेशी बाजारों में चलनिधि के निरंतर दुर्बल बने रहने को प्रतिबिंबित करता है। निवल ईसीबी में वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान बहिर्वाह दर्ज किया गया, जबकि वर्ष 2008-09 की पहली तिमाही के दौरान इसमें निवल अंतर्वाह दर्ज किया गया था। बैंकिंग पूंजी में मुख्यतः विदेशी बैंकों की विदेशी आस्तियाँ और देयताएँ शामिल होती हैं। एनआरआई जमाराशियाँ बाह्य देयताओं का अधिकांश हिस्सा होती हैं। निवल बैंकिंग पूंजी, जिसमें एनआरआई जमाराशियाँ शामिल हैं, भी वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान ऋणात्मक

थीं, जबकि वर्ष 2008-09 की पहली तिमाही के दौरान धनात्मक निवल अंतर्वाह दर्ज किया गया था।

III.23 अप्रैल-जून 2009 के दौरान अल्पावधि व्यापार ऋण के अंतर्गत संवितरण की गति विविध नीतिगत उपायों, यथा, विविध परिपक्वता अवधियों वाले व्यापार ऋण के लिए समग्र लागत सीमा में बढ़ोतरी किये जाने, जो अंतरराष्ट्रीय बाजारों में निधियों की लागत को बढ़ाये जाने के संदर्भ में आवश्यक था, को लागू किये जाने की पृष्ठभूमि में बरकरार रही। तथापि, पिछले वर्ष की तुलनीय अवधि से चुकौतियाँ थोड़ी अधिक थीं। यह उम्मीद की जाती है कि अल्पावधि व्यापार ऋण के संवितरण में वर्तमान प्रवृत्ति बनी रहेगी।

III.24 पूंजीगत लेखा के कतिपय संकेतकों के संबंध में उपलब्ध नवीनतम जानकारी से पता चलता है कि भारत को पूंजी प्रवाह में पुनरुत्थान हुआ है (सारणी 3.10)।

सारणी 3.10: 2009-10 में अब तक पूंजी प्रवाह

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

घटक	अवधि	2008-09	2009-10
1	2	3	4
भारत को एफडीआइ	अप्रैल-अगस्त	16.5	16.2
एफआइआइ (निवल)	अप्रैल-अक्तूबर*	-9.5	18.4
एडीआर / जीडीआर	अप्रैल-सितंबर	1.1	2.6
ईसीबी अनुमोदन	अप्रैल-सितंबर	10.2	7.1
एनआरआइ			
जमाराशियाँ (निवल)	अप्रैल-सितंबर	1.1	2.7

* : 16 अक्तूबर 2009 तक.

एफडीआइ: विदेशी प्रत्यक्ष निवेश

एफआइआइ: विदेशी संस्थागत निवेशक

ईसीबी: बाह्य वाणिज्यिक उधार

एनआरआइ: अनिवासी भारतीय

एडीआर: अमेरिकन डिपॉजिटरी रिसीट

जीडीआर: ग्लोबल डिपॉजिटरी रिसीट

इसका कारण भारत में वर्ष 2009-10 के दौरान बेहतर समष्टि-आर्थिक कार्यनिष्पादन का होना और वैश्विक निवेशकों का भारत सहित ईएमई में बेहतर वृद्धि संभावनाओं के प्रति सकारात्मक रुख होना रहा है।

विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियाँ (भंडार)

III.25 बीओपी आधार पर विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियों में (अर्थात्, मूल्यांकन को छोड़कर) वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान 0.1 बिलियन अमरीकी डॉलर की

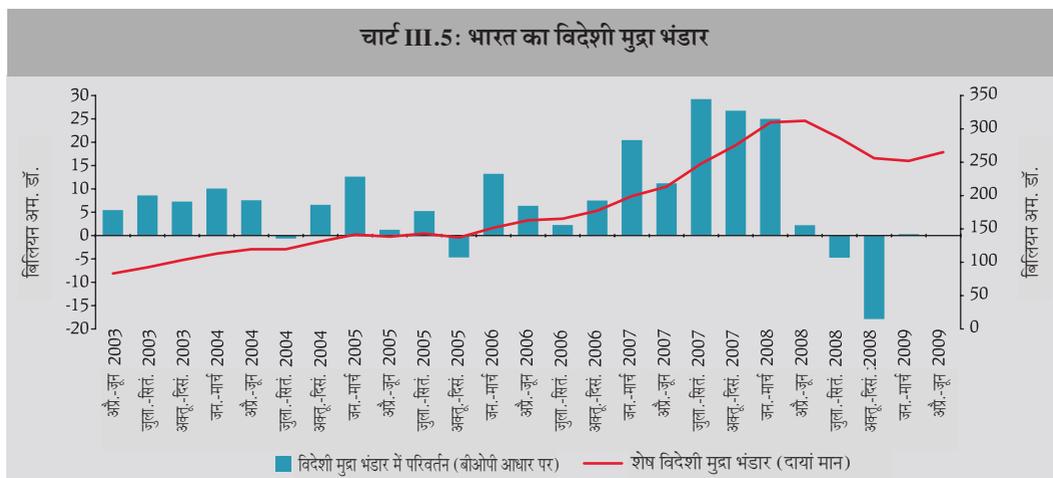
वृद्धि हुई, जबकि वर्ष 2008-09 की तदनुकूल तिमाही के दौरान इनमें 2.2 बिलियन अमरीकी डॉलर तक की बढ़ोतरी हुई थी। अमरीकी डॉलर में प्रमुख मुद्राओं की तुलना में मूल्यहास होने के चलते हुए मूल्यांकन लाभ को ध्यान में रखते हुए विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियों में अप्रैल-जून 2009 के दौरान 13.2 बिलियन अमरीकी डॉलर की बढ़ोतरी हुई, जबकि अप्रैल-जून 2008 के दौरान इनमें 2.4 बिलियन अमरीकी डॉलर की बढ़ोतरी हुई थी (चार्ट III.5)।

III.26 16 अक्तूबर 2009 की स्थिति के अनुसार भारत की विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियाँ 284.8 बिलियन अमरीकी डॉलर की थीं, जो अंत-मार्च 2009 के स्तर (252.0 बिलियन अमरीकी डॉलर) से 32.8 बिलियन अमरीकी डॉलर अधिक है। इस अवधि के दौरान विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियों में बढ़ोतरी में आइएमएफ द्वारा दो लगातार श्रृंखलाओं में क्रमशः 28 अगस्त 2009 और 9 सितंबर 2009 को किया गया एसडीआर आवंटन भी शामिल है (सारणी 3.11)।

बाह्य ऋण

III.27 भारत का बाह्य ऋण जून 2009 के अंत में 227.7 बिलियन अमरीकी डॉलर का था, जबकि मार्च 2009 के अंत में यह 224.0 बिलियन अमरीकी डॉलर का था। इस

चार्ट III.5: भारत का विदेशी मुद्रा भंडार



सारणी 3.11: भारत का विदेशी मुद्रा भंडार

सारणी 3.11: भारत का विदेशी मुद्रा भंडार						
(मिलियन अम. डॉलर)						
माह के अंत में	स्वर्ण	एसडीआर@	विदेशी मुद्रा आस्तियां*	अंशुको में रिज़र्व की स्थिति	कुल (2+3+4+5)	ज़ायन: माह के अंत में रिज़र्व बैंक द्वारा अमरीकी डॉलर की निवल फॉरवर्ड बिक्री (-) / खरीदी (+) का शेष
1	2	3	4	5	6	7
मार्च 2000	2,974	4	35,058	658	38,694	(-) 675
मार्च 2005	4,500	5	135,571	1,438	141,514	-
मार्च 2006	5,755	3	145,108	756	151,622	-
मार्च 2007	6,784	2	191,924	469	199,179	-
मार्च 2008	10,039	18	299,230	436	309,723	(+) 14,735
मार्च 2009	9,577	1	241,426	981	251,985	(-) 2,042
अप्रैल 2009	9,231	1	241,487	983	251,702	(-) 1,071
मई 2009	9,604	1	251,456	1,245	262,306	(+) 131
जून 2009	9,800	1	254,093	1,248	265,142	(+) 745
जुलाई 2009	9,671	1	260,631	1,338	271,641	(+) 800
अगस्त 2009	9,828	4,828	261,247	1,349	277,252	(+) 619
सितंबर 2009	10,316	5,224	264,373	1,365	281,278	-
अक्तूबर 2009#	10,316	5,250	267,898	1,372	284,836	-

* : 20 मार्च 2009 से आइआइएफसी (यूके) द्वारा जारी विदेशी मुद्रा में मूल्यवर्गित 250 मिलियन अमरीकी डॉलर निवेश को छोड़कर।
 @ : आइएमएफ द्वारा 28 अगस्त 2009 तथा 9 सितंबर 2009 को क्रमशः सामान्य आबंटन के अंतर्गत आबंटित 3,082.5 मिलियन एसडीआर तथा विशेष आबंटन के अंतर्गत आबंटित 214.6 एसडीआर शामिल हैं।
 # : 16 अक्तूबर 2009 को - : उपलब्ध नहीं।

अवधि के दौरान बाह्य ऋण में 1.7 प्रतिशत की वृद्धि मुख्यतः दीर्घावधि बाह्य ऋण, खास कर अनिवासी भारतीय (एनआरआई) जमाराशियों, के बढ़ने के कारण हुई (सारणी 3.12)। तथापि, अल्पावधि ऋण में इसी अवधि के दौरान 3.0 बिलियन अमरीकी डॉलर की गिरावट आयी, जिसका मुख्य कारण था अल्पावधि व्यापार ऋण (6 महीनों तक) में गिरावट आना। तदनुसार कुल ऋण की तुलना में अल्पावधि ऋण का अनुपात इसी अवधि के दौरान 19.5 प्रतिशत से घट कर 17.8 प्रतिशत हो गया। जीडीपी की तुलना में बाह्य ऋण का अनुपात, जो अंत-मार्च 2008 में 18.9 प्रतिशत था, वह अंत-मार्च 2009 में बढ़ कर 21.4 प्रतिशत हो गया। कर्ज चुकौती अनुपात पिछले तीन वर्षों के दौरान लगातार कम होता रहा और वह अंत-मार्च 2009

में 4.6 प्रतिशत था। अप्रैल-जून 2009 के लिए कर्ज चुकौती अनुपात 5.5 प्रतिशत रहा।

III.28 बकाया ऋण की अवशिष्ट परिपक्वता अवधि के मापन के आधार पर - अल्पावधि में कर्ज चुकौती देयता के मूल्यांकन के लिए एक संकेतक - संशोधित अल्पावधि ऋण (एक वर्ष से कम) अंत-मार्च 2009 में लगभग 87.5 बिलियन अमरीकी डॉलर अनुमानित था, जो वर्ष 2009-10 के दौरान चुकौती के लिए देय होगा। इसमें 43.6 बिलियन अमरीकी डॉलर का मूल परिपक्वता अवधि पर आधारित अल्पावधि ऋण और एक वर्ष के भीतर भुगतान के लिए देय होने वाला 43.9 बिलियन अमरीकी डॉलर का दीर्घावधि बाह्य ऋण शामिल है। 43.9 बिलियन अमरीकी डॉलर की इस राशि में 32.1 बिलियन अमरीकी

सारणी 3.12: भारत का बाह्य ऋण

(बिलियन अम. डॉलर)					
मद	मार्च 2008 के अंत में	मार्च 2009 के अंत में आंसं.	जून 2009 के अंत में अ.	घट-बढ़	
				(मार्च 2009 की तुलना में जून 2009)	
				राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6
1. बहुपक्षीय	39.5	39.5	41.2	1.7	4.3
2. द्विपक्षीय	19.7	20.6	21.4	0.8	3.9
3. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष	0	0	0	0.0	0
4. व्यापार ऋण (1 वर्ष से अधिक)	10.4	14.6	15.1	0.4	2.9
5. बाह्य वाणिज्यिक उधार	62.3	62.5	63.2	0.6	1.0
6. अनिवासी भारतीय जमाराशि	43.7	41.6	44.6	3.0	7.3
7. रुपया ऋण	2.0	1.5	1.6	0.1	5.2
8. दीर्घावधि (1 से 7)	177.6	180.4	187.1	6.7	3.7
9. अल्पावधि	45.7	43.6	40.6	-3.0	-6.8
कुल (8+9)	223.3	224.0	227.7	3.7	1.7
<i>जापन:</i>					प्रतिशत
कुल ऋण / जीडीपी	18.9	21.4	-		
अल्पावधि ऋण / कुल ऋण	20.5	19.5	17.8		
अल्पावधि ऋण / रिजर्व	14.8	17.3	15.3		
रियायती ऋण / कुल ऋण	19.8	18.7	19.0		
रिजर्व / कुल ऋण	138.7	112.5	116.5		
ऋण चुकौती अनुपात	4.8	4.6	5.5		
अ.: अर्न्तम	आंसं.: आंशिक संशोधन				

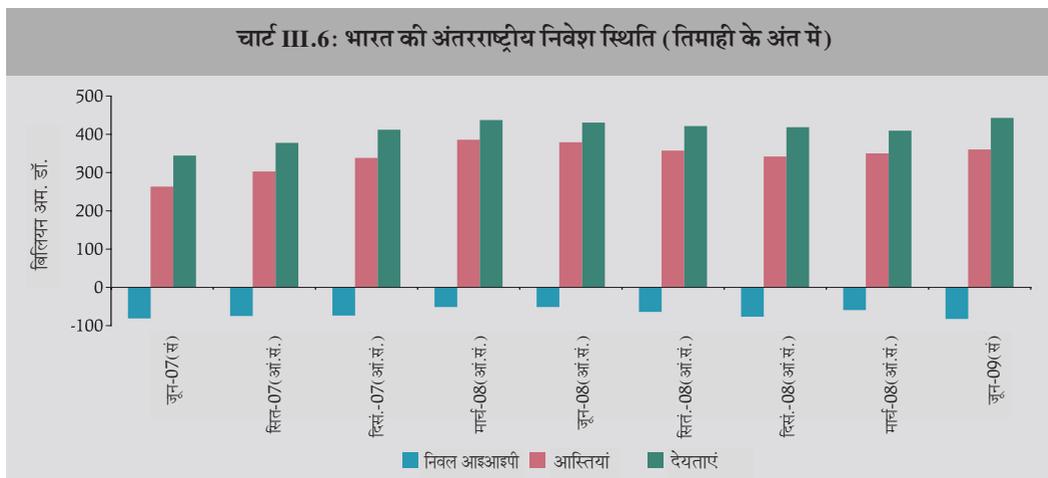
डॉलर की एनआरआइ जमाराशियाँ हैं। एनआरआइ जमाराशियों का बढ़ा हिस्सा (लगभग 70 प्रतिशत) रुपयों में है और वर्ष 2009-10 के दौरान इसमें अब तक (30 सितंबर 2009 तक) लगभग 2.7 बिलियन अमरीकी डॉलर की निवल अनुवृद्धि हुई है।

अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति

III.29 भारत की निवल अंतरराष्ट्रीय देयताएँ अंत-जून 2009 में 82.5 बिलियन अमरीकी डॉलर की थी, जबकि अंत-मार्च 2009 में वे 59.4 बिलियन अमरीकी डॉलर की थी। अंतरराष्ट्रीय आस्तियाँ अंत-मार्च 2009 के 350.0 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर अंत-जून 2009 में 366.2 बिलियन अमरीकी डॉलर की हो

गयीं, जिसका मुख्य कारण था तिमाही के दौरान प्रारक्षित आस्तियों में बढ़ोतरी होना। इसी अवधि में अंतरराष्ट्रीय देयताओं के 409.4 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 442.7 बिलियन अमरीकी डॉलर होने का कारण था भारत में आवक प्रत्यक्ष निवेश और संविभाग इक्विटी निवेश में वृद्धि होना (चार्ट III.6)।

III.30 वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान उसकी पूर्ववर्ती तिमाही की तुलना में निर्यात में गिरावट आयी और आयात में बढ़ोतरी हुई, जबकि निजी अंतरण प्राप्तियों में उछाल आया। निवल अदृश्य मदों के अधिशेष में होने पर भी निर्यात में गिरावट और आयात में बढ़ोतरी के परिणामस्वरूप वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान चालू खाता घाटा हुआ। फिर भी, अंतरराष्ट्रीय



निवेशकों का भारत में फिर से भरोसा होने पर पूँजी अंतर्वाह में पुनरुत्थान हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप, पूँजी खाता, जो वर्ष 2008-09 की अंतिम दो तिमाहियों में घाटे में था, वह वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में अधिशेष में हो गया। तदनुसार, बीओपी आधार पर (अर्थात्, मूल्यांकन को छोड़कर) विदेशी प्रारक्षित निधियों में सीमांतिक वृद्धि हुई। मूल्यांकन प्रभाव को शामिल करते हुए प्रारक्षित निधियों में वर्ष 2009-10

की पहली तिमाही में अधिक बढ़ोतरी देखी गयी और प्रारक्षित निधियों में अनुवृद्धि वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में जारी रही। इस प्रकार, भुगतान संतुलन की गतिविधियाँ यह बताती हैं कि पूँजी प्रवाह के पुनरुत्थान और चालू खाता घाटे के संयत स्तर के कारण बाह्य क्षेत्र से संबंधित चिंता घटी है। हाल की अवधि में भारतीय रुपये के मूल्य में कुछ वृद्धि हुई है, जबकि देश की प्रारक्षित निधि का स्तर बढ़ा है।